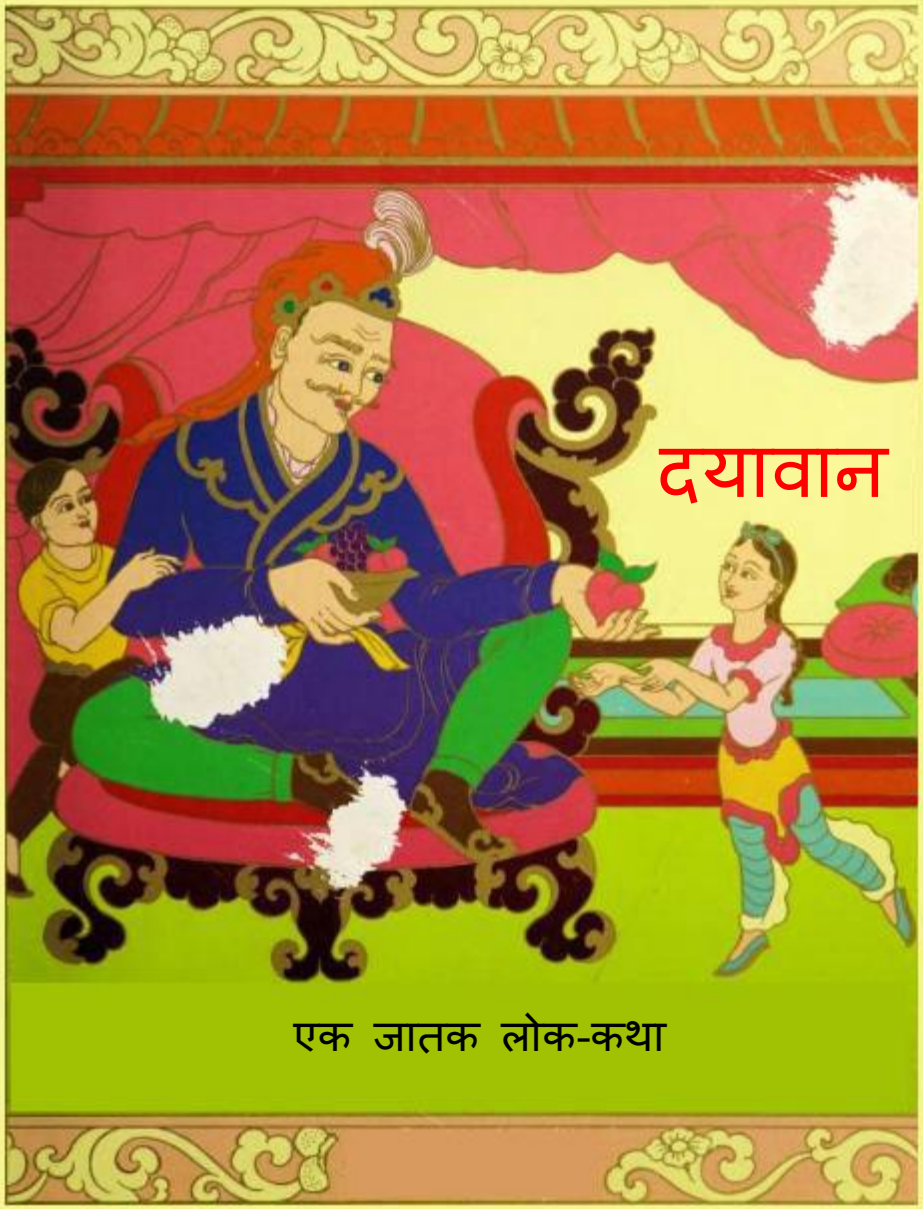
दयावान
एक जातक लोक-कथा

बहुत समय पहले एक नगर में एक व्यक्ति रहता था जो इतना धनी था कि उसके महल के कई भंडार बहुमूल्य वस्तुओं से भरे पड़े थे.

महल के गलियारों और बागों में सामान पड़ा था. जिस वस्तु की भी कामना कोई कर सकता था उन सब की उसके पास भरमार थी.

लेकिन उसे सबसे अधिक आनंद अपनी संपत्ति को उन लोगों के साथ बांटने में मिलता था जो उससे कम भाग्यशाली थे. उसकी अनवरत उदारता के लिए लोग उसे दयावान कह कर बुलाते थे. कपड़ों और खाने के सामान से भरे टोकरे लेकर हर दिन, दुपहर के समय, वह बग़ीचे में आ जाता था और जिन लोगों को उन चीज़ों की आवश्यकता होती था उन्हें दे देता था. वह किसी भी अनुरोध को ठुकरा न पाता था. अगर कोई उससे उसकी उत्कृष्ट किताबें या कालीन, उसके रथ या सबसे अच्छे घोड़े मांगता तो, बिना सोच-विचार किये, वह सब कुछ मांगने वाले को दे देता.

"संपत्ति दुःख का कितना बड़ा कारण है," उसने सोचा. "धनी लोग चिंतित रहते हैं कि कहीं वह अपना धन खो न बैठें और गरीब व्यक्ति धन के अभाव के कारण चिंतित रहते हैं. अधिक संपत्ति की मुझे क्या आवश्यकता है? मेरे धन को अभावग्रस्त लोगों के जीवन में खुशियाँ लाने दो!"

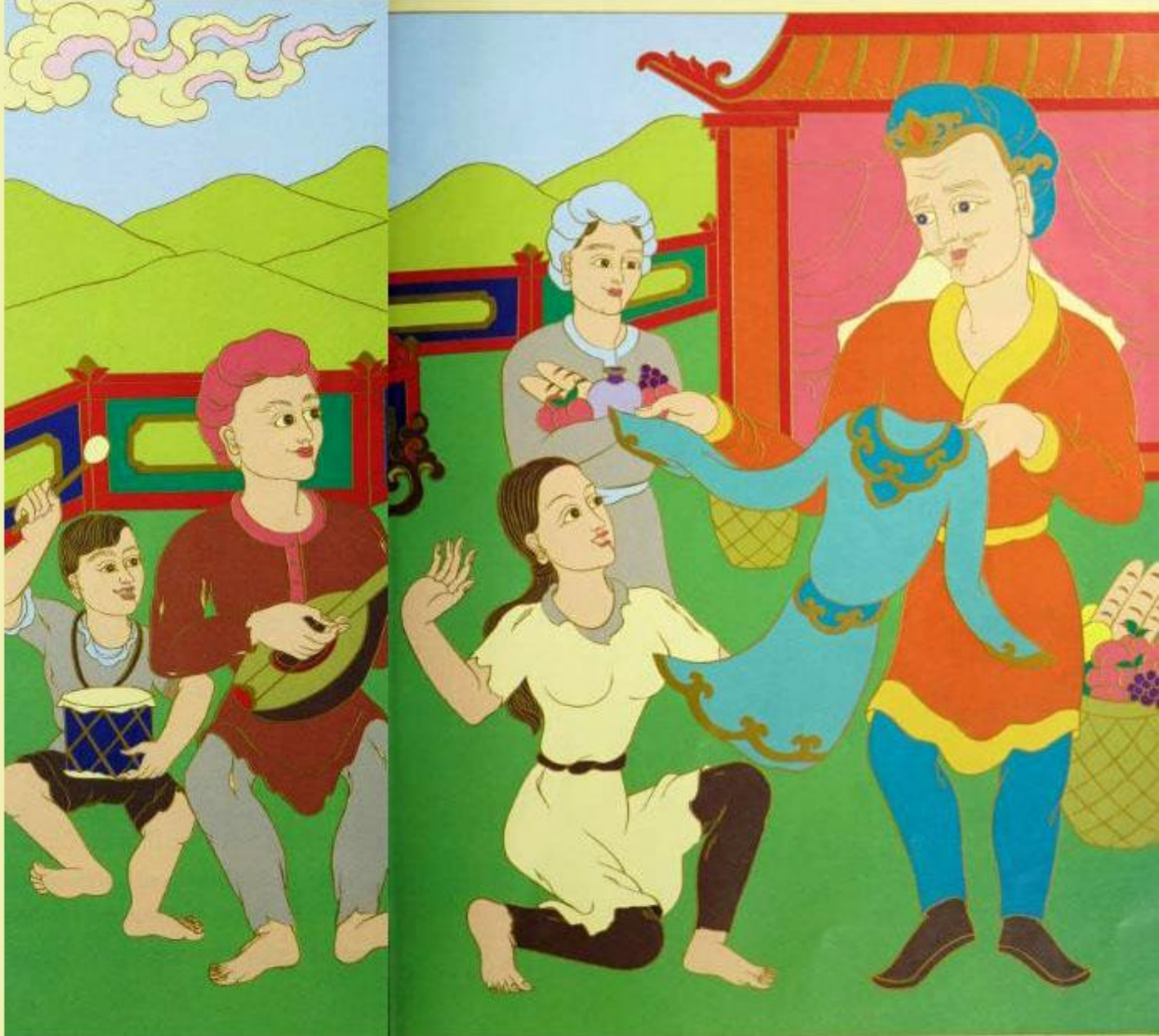

इस भांति गरीब लोग अपने दुखों से झुटकारा पा जाते और अपनी संपत्ति उन अभागों के साथ बाँट कर दयावान को आंनद मिलता. चारों ओर यह बात फैल गई कि विपत्ति के समय कोई भी उससे सहायता पा सकता था. दयावान की प्रसिद्धि देवलोक तक पहुँच गई. उस लोक में दिव्य दैवता रहते थे, जो सबसे ऊँचे पहाड़ों के भी बहुत ऊपर उड़ते थे. देवों के देवं, शक्तिशाली शक्र देव, को धरती पर रहने वाले मानवों को देखना और उनके साहस और सच्चाई की परीक्षा लेना उन्हें अच्छा लगता था.

“अगर यह आदमी सच में दयालु है तो विपत्ति और कठिनाइयाँ इसके चरित्र को और भी निखार देंगी.

“एक धनी व्यक्ति के लिए दयालु होना सरल होता है. देखना तो यह कि क्या अपना धन खोने के बाद भी वह दान करता है!”

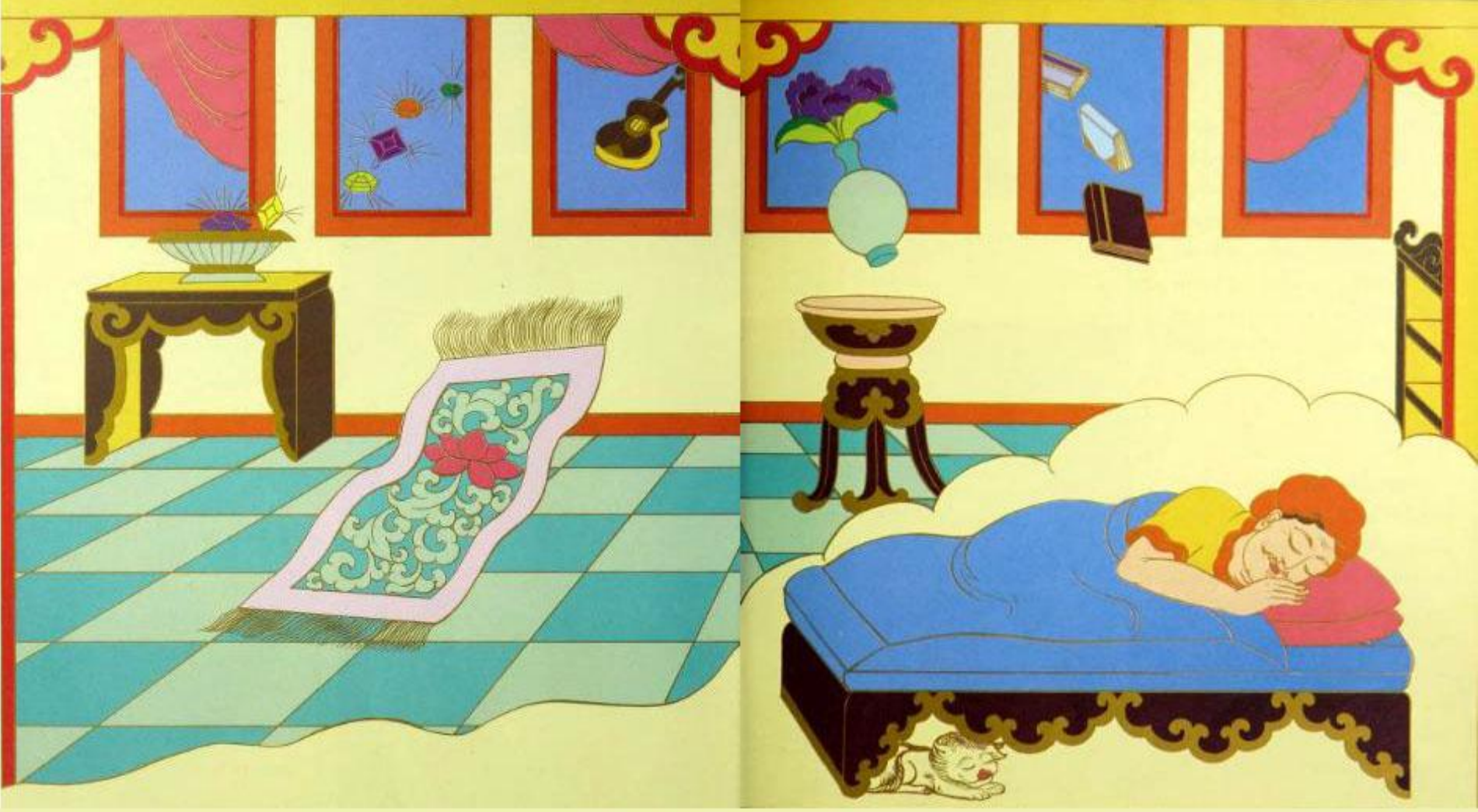

उसी रात दयावान के भंडारों में रखे आभूषण और संगीत वाद्य-यंत्र शक्र देव ने गायब कर दिये. लेकिन दयावान ने कोई परवाह नहीं की. फिर कालीनों और परदों के ढेर गायब हो गए.

और फिर अलमारियों में रखे वस्त्र गायब हो गए. तब भी दयावान ने कोई परवाह नहीं की. दयावान को पूरी तरह लालचरहित देख कर शक्र देव आश्चर्य-चकित हो गये और उन्होंने उसकी कठोर परीक्षा लेने का निर्णय लिया.

अगली सुबह जब दयावान उठा तो उसने अपने महल को पूरी तरह खाली पाया जैसे कि भयंकर आँधी में सारा सामान उड़ गया था. न कोई फर्नीचर बचा था, न ही कपड़े और न ही अनाज का एक दाना. बचा था तो बस एक रस्सा, एक हँसिया और रात में पहनी हुई उसकी कमीज़.

"कितनी अजीब घटना घटी है!" दयावान ने सोचा. "शायद कोई निर्धन आदमी चोरी-छिपे रात में आकर सारा सामान ले गया होगा. अगर ऐसा हुआ था तो मेरी संपत्ति का सद-उपयोग ही हुआ. लेकिन मेरे घर को इस तरह खाली देखकर अन्य गरीब कितने निराश हो जायेंगे. इस हँसिये का उपयोग कर शायद मैं उनकी कोई सहायता कर पाऊँ."

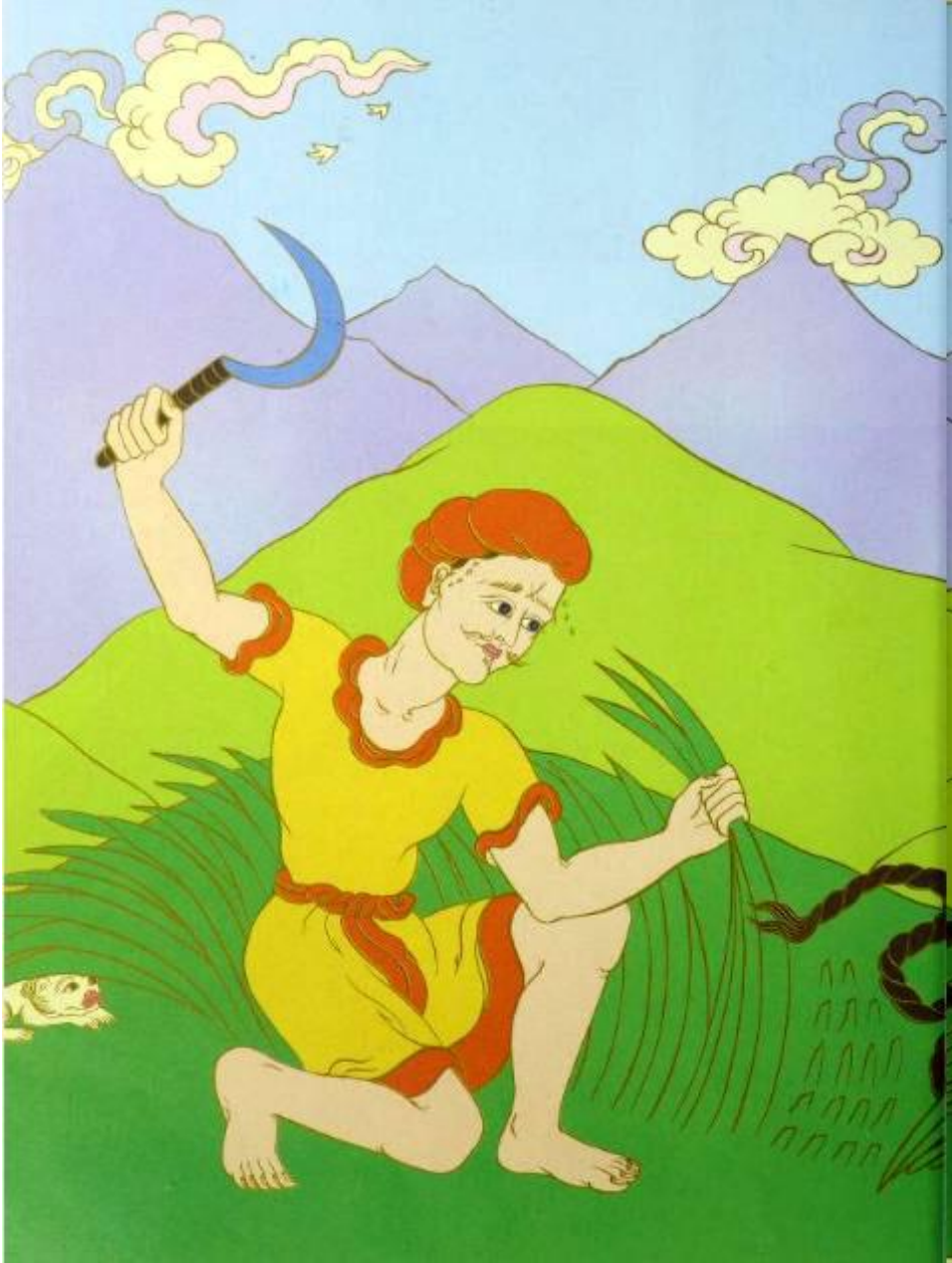

खेतों में जाकर, गाँव के गरीब लोगों के साथ मिलकर, वह घास काटने लगा. यह सोचते हुए कि संसार में कई लोग थे जिनके पास उससे भी कम संपत्ति थी, उसने तपती धूप में सारा दिन कठोर परिश्रम किया.

“मुझे अबतक समझ न आया था कि गरीब आदमी का जीवन कितना कठिन होता है. मैं इतना असहाय महसूस कर रहा हूँ कि खाने के लिए मैं किसी से भिक्षा भी नहीं मांग सकता. फिर भी अपने बच्चों का पेट भरने के लिए गरीब लोगों को भीख मांगनी ही पड़ती है. बीमार लोगों का शक्तिशाली और स्वस्थ लोगों से सहायता लेनी ही पड़ती है.

“हर कोई खुशियाँ पाना चाहता है और हर किसी को कष्टों से भय लगता है. हम सब एक जैसे हैं और इस संसार में एक साथ हैं. जब तक मेरे आसपास लोग कष्ट सह रहे हैं, मैं प्रसन्न कैसे हो सकता हूँ?”

लोगों की सहायता करने की उसकी कामना दिन-प्रतिदिन प्रबल होती गई. इसी कारण वह और अधिक कठोर परिश्रम करने लगा. “अगर मैं पर्याप्त घास काट लेता हूँ तो अपने गरीब मित्रों को देने के लिए मेरे पास कुछ होगा.”

अपनी उपज काट कर जो कुछ वह कमाता, उसे वह उन लोगों में बाँट देता जो ज़रूरतमंद थे. लड़के और लड़कियाँ, पिता और माता, जो भूखे थे और जो बीमार थे, जिनके पास बहुत थोड़ा था और जिनके पास कुछ भी न था, वह सब दयावान के पास आते थे और उनके कुछ कह पाने से पहले ही वह उन्हें चमकदार सोने का सिक्का दे देता.

उस गरीब, वृद्ध व्यक्ति को अपना सारा धन गरीबों को देते देखकर बाज़ार के सब व्यापारी आश्चर्य-चकित होते और निराशा में अपना सिर हिलाते.

“अरे भले मानस, तुम अपना ध्यान क्यों नहीं रखते और अपने परिवार की देखभाल क्यों नहीं करते?”

उनकी बात सुनकर दयावान मुस्करा दिया और बोला, “वह सब मेरा ही परिवार हैं. कौन कह सकता है कि हम सब एक-दूसरे के संबंधी नहीं हैं. शायद किसी और काल में और किसी और जगह में यह गरीब, भूखी औरत मेरी माँ रही होगी.”

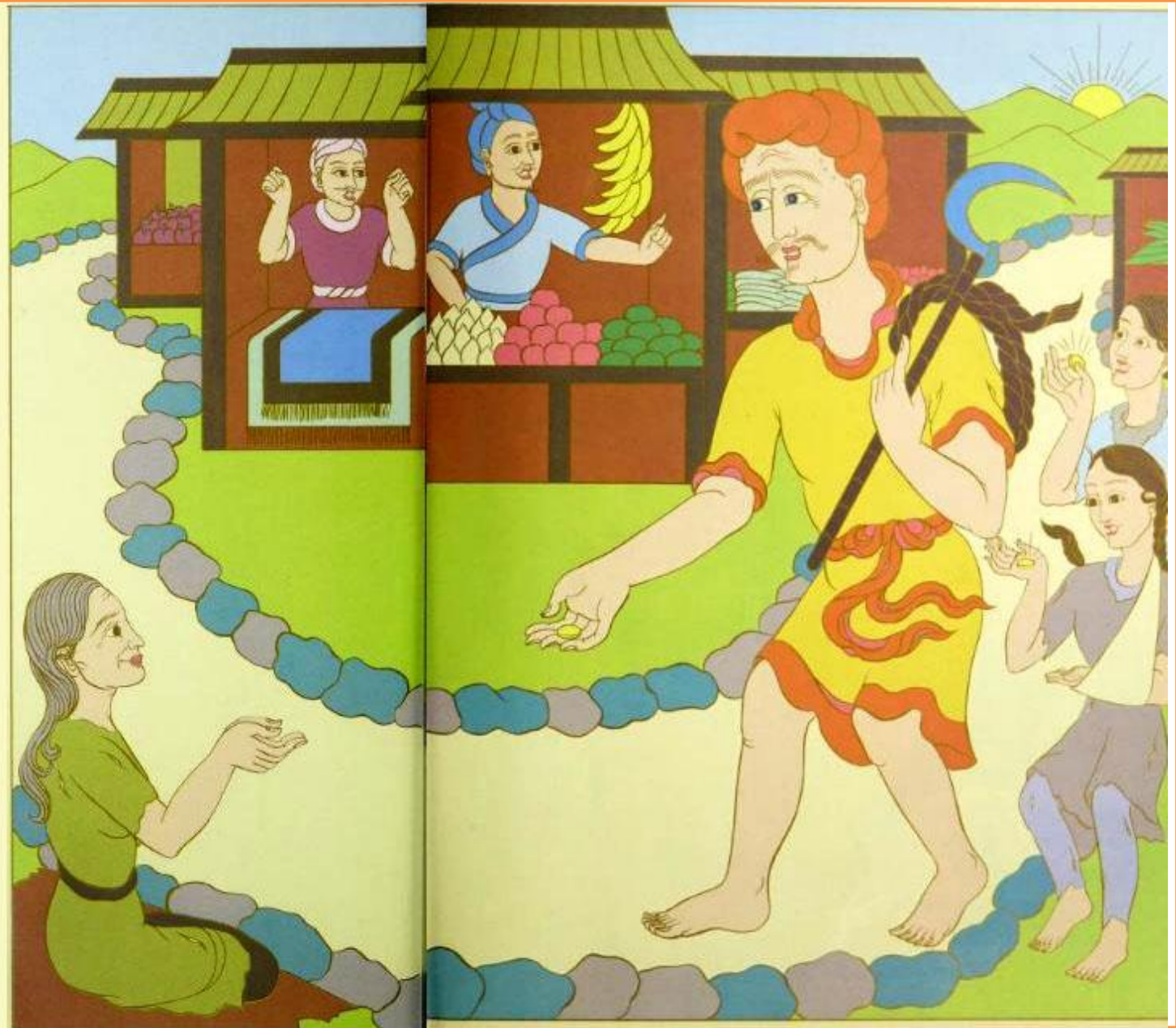

लेकिन दयावान की जो परीक्षा देवों के देव शक्र ले रहे थे वह अभी समाप्त न हुई थी. जादुई बादलों में लिपट कर वह आकाश में प्रकट हुए ताकि दयावान के अतिरिक्त कोई उन्हें देख न पाए. उन्होंने कहा:

"मूर्ख! दान देने की अपनी प्रकृति को नियंत्रित करो. इस नियंत्रण से ही तुम अपनी धन-संपत्ति बढ़ा सकते हो. दुबारा धन संग्रह कर के तुम अधिक दान दे पाओगे. जब देने के लिए कुछ भी न हो तो दान न देने में कोई दोष नहीं होता."

दयावान ने कहा, "शक्र देव, जो आप कह रहे हैं वह मैं नहीं कर सकता. हमारे आसपास लोग कितने कष्ट में हैं. अगर कोई गरीब आदमी भूखा है और आज मुझ से सहायता मांगता है तो मैं उसे तब तक प्रतीक्षा नहीं करा सकता जब तक कि मेरा धन संग्रहित नहीं हो जाता. जो व्यक्ति दूसरों की सहायता करना चाहता है, वह तभी अपना सब कुछ दे देगा जब देने की आवश्यकता होगी. मैं दान देना बंद नहीं करूँगा, क्योंकि इससे दूसरों का हित होता है और मुझे खुशी मिलती है."

आखिरकार, शक्र देव को विश्वास हो गया. “अब मुझे समझ आ गया है कि तुम एक सच्चे और दृढ़ स्वभाव के व्यक्ति हो. तुम्हारा उदार चरित्र सूर्य समान जगमगाता है क्योंकि स्वार्थ के काले बादलों को तुमने सदा के लिए हटा दिया है.

तुम चाहे धनी थे या निर्धन, तुम अपने चरित्र पर दृढ़ रहे. जिस प्रकार हवा का झोंका एक पहाड़ को हिला नहीं सकता वैसे ही मैं तुम्हें अपने निश्चय से नहीं डिगा सकता. श्रीमन्, मुझे एक बात स्वीकार करनी है.”

शक्र देव ने अपना हाथ हिलाया और दयावान को अपनी सारी संपत्ति वापस मिल गई. महल की सब वस्तुयें वापस आ गई, सारे आभूषण तिजौरी में और अन्न के सब दाने भंडारों में वापस आ गए.

“मैंने ही तुम्हारी संपत्ति को गायब कर दिया था. मुझे क्षमा करना और भविष्य में तुम अपने उपहार वैसे ही दान में देते रहना जिस तरह बादल वर्षा देते हैं.”

दयावान सदा दानशीलता के साथ व्यवहार करता रहा और एक समय आ गया जब संसार के हर व्यक्ति के साथ वह प्रेम करने लगा था. उसकी कहानी हमें बताती है कि दानशीलता ही सुख पाने का एकमात्र उपाय है.

अगर आपका हृदय उदार है तो आपकी प्रसन्नता सच्ची होगी. जो सुख आप दूसरों को देंगे वही सुख आप के पास लौट कर आएगा.